ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

केशव सिंह 'विमल' प्रणीत ऐतिहासिक महाकाव्य क्षत्राणी दुर्गावती

डा. आनन्द शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
वी0एस0एस0डी0 कालेज, कानपुर

महाकाव्य पूर्णतः सजा–सँवरा एवं सलोना प्रतीत होता है। भाषा भावानुगामिनी है, प्रान्जल है एवं सशक्त है। जिसका नाद सौन्दर्य सम्बन्धित वर्णन के बिम्ब को साकार रूप में पाठक के समक्ष उपस्थित कर देता है। शब्दों का प्रयोग प्रशंसनीय है। स्थल के अनुरूप शब्दों का चयन कवि की अपनी विशेषता है। तद्भव, तत्सम, देशज के साथ ही संस्कृत एवं उर्दू के शब्दों का प्रयोग भाव सम्प्रेषण हेतु अतीव उपयुक्त बन पड़ा है। शैली प्रवाहयुक्त, प्रान्जल एवं मुहावरेदार है, प्रसाद गुणसम्पन्न है। भावानुरूप माधुर्य एवं ओज से परिपूर्ण है। छंद वैविध्य महाकाव्य की अनिवार्यता है, अतः सुकवि ने गीत, दोहे, छप्पय एवं हरिगीतिका का प्रयोग अत्यन्त सौष्ठव के साथ किया है। अलंकार स्वाभाविक रूप से महाकाव्य को अलंकृत कर रहे हैं। बिना किसी प्रयास के उनकी मनोहारिणी छटा पग–पग पर दृष्टिगोचर हो रही है। कहीं मानवीकरण, कहीं विरोधाभास कथन को प्रभावशाली बना रहे हैं। कहीं उपमा, रूपक एवं उत्प्रेक्षा भाव और भाषा को चमत्कृत कर रहे हैं। अनुप्रास अलंकार प्रायः सर्वत्र पदलालित्य को संवर्द्धित करता हुआ दिखाई दे रहा है।

पात्रों का चरित्र चित्रण इतना जीवन्त, यथार्थ, स्वाभाविक एवं सहज है कि उनके साथ पाठक की आत्मीयता एवं सहानुभूति अनायास ही स्थापित हो जाती है। नायिका के सर्वातिशायी चरित्रोत्कर्ष के बाद यदि किसी चरित्र ने मुझे प्रभावित किया है तो वह है स्वामिभक्ति एवं राष्ट्रभक्ति की जीती जागती प्रतिमा सुमति। सेनापति ऊधम सिंह, सुमेर सिंह, योद्धा मोहनदास, राजकुमार, वीर नारायण सभी सच्चे राष्ट्रभक्त हैं। नारी पात्रों में बिन्दुमती, कमला, चिरैया आदि का शौर्य एवं उत्साह प्रशंसनीय है। गनू खाँ का बलिदान चिर स्मरणीय है। मानवेतर पात्र सरमन हाथी द्वारा रानी के शव को आच्छादित कर लेना कवि की कल्पना एवं चिन्तन का उदात्त आयाम है। काव्य में ऐतिहासिकता, यथार्थता एवं संप्रेषणीयता के साथ–साथ प्रमाणिकता भी विद्यमान है। क्योंकि कवि ने मात्र पुस्तकों का अध्ययन कर घर बैठे ही इसकी सर्जना नहीं की है, वरन् गवेषणा की है, शोध किया है और ऐतिहासिक स्थलों की स्वयं यात्रा कर तथ्यपूरक सामग्री का संकलन किया है। यह वीरांगना नारी कालिंजर, राज्य के प्रतापी नरे" । कीर्तिराम चंदेल की एक मात्र पुत्री थी। इनका भौ" ाव काल अपने बाबा महोबा के राजा भााालि–वाहन के राज महिल में बीता। भौ" ाव काल में ही इन्हें अपनी माता का साथ छूट गया था। कुछ दिनों बाद इन्हें कालिंजर के राज भवन में लाया गया। यहाँ पर इन्हें अनेक विद्याओं में पारंगत किया गया। रशचातुर्य इन्हें जन्म से ही मिला था। इनमें छोटे से ही बुद्धि, विवेक और राजसी गुणों की झलक मिलने लगी थी। कुछ और बड़े होने पर

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

राज–काज में भी सहायता देने लगी थी? अब वह अपने पिता के साथ रणक्षेत्र में भी जान लगी। यह अद्भुत रूपवान, ओजपूर्ण, बुद्धि और विवेक वान भारीर भाोश्ठव उमंग से भरी एक अलौकिक रचना सी लगती थी।

थी स्वर्ण सलोनी सी काया, विद्युत वदना सी लगती थीं।
आलोकित होती थी छवि से, मुख चन्द्र प्रभा सी जगती थी।
सजकर क्षत्राणी वेश बना, घोड़े पर ऐंड़ लगाती थी,
विश बाण करों से नयनों से, दोनों से ही बरसाती थी।

उस समय कालिंजर राज्य चारों ओर से भात्रुओं से घिरा हुआ था। साम्राज्यवादी मुगुल भाासक सभी छोटे राज्यों को जीत कर अपने साम्राज्य को बढ़ा रहे थे। दुर्गावती ने सम चतुर नीति अपनाकर अपना विवाह गौडवाना राज्य के एक भाक्ति भााली प्रतापी नरेश दलपति भााह से कर के अपने राज्य को स" ाक्त बना लिया था। किन्तु दलपति नरेश के जल्दी ही भारीर छोड़ देने से राज्य का सारा भार रानी के ही कन्धों पर आ गया था। अब उनके ऊपर दो–दो राज्यों के चलाने की चुनौती का भी सामाना करना था। उनके पुत्र वीर नारायण अभी शिशु रूप में थे। फिर भी रानी ऐसी परिस्थितियों से घिर कर भी अपने को भात्रुओं से मोहरा लेने को तैयार करने लगी। राज्य में चारों ओर विकास कार्य चल पड़े। सेना को चुस्त दुरुस्त किया गया। रानी ने राज्य को एक नये रुप में बदल दिया। सहसा कोई भी भात्रु रानी के राज्य के भीतर पैर रखने की जुर्रत नहीं करता था। वे भात्रुओं को मारकर खदेड़ देती थी। राज्य की लिप्सा में लिप्त भााह" ााह अकबर अपने सूबेदारों को उकसा कर गोंडबाना राज्य को को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाने के लिये व्याकुल था। उसने कड़े के महाबली सूबेदार को अधिक से अधिक सैन्य बल देकर हुकुम दे रखा था कि वह जल्द से जल्द गोंडवाना पर अधिकार करके रानी को उस के पास ले जाकर पेश करे। आसफ खां ने पूरी तैयारी करके गोंडवाना पर बड़ा जोरदार आक्रमण किया। परन्तु रानी ने अपने बुद्धिबल और वि" ोश रणनीति का आश्रय ले उसे खदेड़ कर बाहर कर दिया। उसकी सेना कुचल दी गयी। वह बार–बार आक्रमण करता किन्तु रानी हर बार उस की फौज को घेर कर तहस नहस कर देती थी। भााल" ााल इस सूचना पर भड़क गया और उस ने आसफ फां को दिल्ली तलब किया। अकबर ने आसफ खां को को बहुत डांटा। उन दोनों में संवाद हुआ आर ऑसफ ने जो उत्तर दिया उसे सुनकर इस देश की नारियों की अपार क्षमता का परिचय मिलता है –

बोला आसफ से क्यों अब तक, रानी को पकड़ नहीं पाया?
भाासन के सख्त ि" ाकंजों में, क्यों अब तक जकड़ नहीं पाया?
वह अदना, अबला औरतिया, भााही सेना उस से हारी?
तू देख रहा ना मर्द अरे तो हीन हमारी है भारी।
बोला आसफ था कांप रहा, यह काम ने आसां है इतना,
उस नाजुक क़ंचन काया में, विश भरा हुआ सागर जैसा।
जो बाज जुनाना वह मालिक, जंगों को हँस कर लड़ती हैं।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

जादू उस की ललकारों में, चलती है मगर न दिखती है।
वह भाक्ति – बल्य है, बुद्धि बला, भौर्य
वह युक्ति बला, बला, है धैर्य बला, है बाहु बला,
फिर कैसे उसे कहें अबला?

अब अकबर ने उसे तमाम तोपों और आर्ग्रय भास्त्रों से लैस कर और मनमानी भााही सेना गौंडवाना युद्ध के लिये, झांक दी। अब तक तो तीर–तलवार से युद्ध होता रहा था। अब आसफ को अपार भाक्ति प्राप्त हो गयी। गोंडवाना राज्य में जगह जगह भेदिये पहुँच गये। अब वहाँ छम्म युद्ध आरम्भ हुआ। हर किले के सामने तोपें लगाकर मोर्चा बंदी कर दी गयी सारे गोंडवाने को घेर लिया गया। रानी ने यह सब देखा और भी चौगुने भौर्य और साहस, से सामना करने के लिये तैयार हुयी। अनेक मोर्चो में रानी ने विजय पायी। उनके कौशल की मुगुल सेना भी सराहना करती रही। उनके पुत्र वीर नारायण ने भी अपना रण कौ" ाल दिखला कर भात्रुओं को चकित कर दिया। अपार भााही सेना से घिर कर भी महारानी के माथे पर शिकन नहीं आयो।

इस युद्ध में दे" ावासियों ने अपनी–प्रजा महारानी का खुल कर साथ दिया। नारी सेना ने महारानी का कवच बनकर भयंकर युद्ध किया। एक ओर इतनी अपार सेना तोपो पर भी छद्म युद्ध का भी सहारा, दूसरी ओर मुठ्ठी भर सेना, तीर–तलवारों से युद्ध, छद्म रहित धर्म–युद्ध। एक अबला नारी के साथ यह कैसा असंगत युद्ध था निरंकु" ा और अन्यायी भासक अपना यह घृणित इतिहास इस देश के उज्जवल इतिहास के साथ बेमेल कर रहे थे। दुनिया के लोग उस समय इस युद्ध पर निगाहें डाले हुये अन्यायियों को धिक्कार रहे थे और रानी पर श्रद्धा की वर्शा कर रहे थे।

अन्ततः रानी की सेना भाक्ति समाप्त हो चली। वे चारों ओर से घिर गयी थीं। बरहा नाला के पास, अन्तिम युद्ध में भात्रु ने चारों ओर से घेरा डालकर बस उन्हीं को लक्ष्य बनाये हुये थे। इतना घिर कर भी खूलन से लथपथ रानी हाथी के ऊपर से सिंह की तरह दहाड रहीं थीं –

थी सभी ओर से घिरीं हुयी, परवाह न की कुछ रानी ने।
ये अरुण नैन भृकुटी टेढ़ी, उठ लालकारा क्षत्रानी ने।
मैं एक अकेली नारी हूँ, मुझ को बल वि" व विधाता का।
लड़ लो मत हटना पीछे को, यदि दूध पिया हो माता का।
फिर छोड़े विकराल निं" ाख अनवरत चले वे, सन्नाते।
सैनिक भी उनके बरस पड़े, भागी अरि सेना झल्लाते।

इस प्रकार रानी जब तीरों की जोर दार वर्शा कर रही थी तब भात्रुओं का एक तीर रानी की आँख में धँस गया और दूसरा तीर आकर कंठ में आ धँसा। पर मर्दानी नारी ने इस की भी परवाह नहीं किया।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

तन छेद गया था, खेद न था, महरानी मुदित महा मति थी।
थे नैन बन्द अरु बैन बन्द, पर मन्द न तीरों की गति थी।

उस समय विकलांगा रानी से उन के महावत गनू ने करबद्ध प्रार्थना किया कि माता आप कृपा कर मुझे आज्ञा दें तो मैं अभी इसी क्षण आपको यहाँ से निकाल कर बाहर से जाऊँ। माँ यह अनमोल जीवन, जो हमारा जीवन–धन है वह बच जाय। महारानी को महावत की यह प्रार्थना ठेस पहुँचाने वाली थी। कंठ में बाण धँसे होने से रानी कठिनाई से से बोली –

न" वर भारीर के हेतु अरे। तुम कहते पीठ दिखाऊ मैं।
मिट्टी के तन के हेतु भुला वीरों का धर्म बसाऊँ मैं?
है यही धर्म हम वीरों का, सन्मुख ही लड़कर मर जाना।
भोभा है तन का रंच रंचा संग्राम भूमि में कर जाना।

रानी ने संकल्प कर लिया था कि जीते जी वे भात्रुओं से अपने भारीर का स्पर्श नहीं करने देंगी। यह तो क्षत्रियों की पावन पताका में कलंक का लग जाना है।

यह कह कर वीर–ब्रता रानी, विद्युत लहरी लहरावत सी।
ली छीन छपट कर पीछे से, नंगी तलवार महावत की।
अरु तान दूर तम अंबर में, तलवार उदर में धँसा लिया,

रह गये देखते क्रूर रावन, छा गया तिमिर, बुझे गया दिया। और उसी समय उनका घायल हाथी सरमन भी उन के भाव के ऊपर गिरकर उन को परी तरह से दांप लिया। जिससे यवन सैनिक उनके मृत भारीर को भी नहीं छू पाये। रानी बहुसंख्य सबल भात्रुओं से अन्तिम क्षणों तक लड़ती रही। वह कई बार रणक्षेत्र को भात्रुओं की लाशों से पाटती रही और अन्तिम क्षणों तक यवन सैनिकों का संहार होता रहा। महारानी लड़ते लड़ते वरी गति को प्राप्त हुयी। किन्तु अपने पीछे एक ऐसा इतिहास छोड़ गई जो भारतीय नारियों की धमनियों के रक्त को गरमातम रहेगा। वह ऐसा प्रकाश स्तम्भ बनेगा जो सहस्रों वर्शों तक उनका दिशा निर्देशन करेगा। अपनी मातृ–भूमि के लिये उनका यह अविस्मरणीय बलिदान देश की नर–नारियों के स्वाभिमान को जगाता रहेगा।

नारी पर लिखा गया ''छात्राणी दुर्गावती महाकाव्य'' की यही भाुभेच्छा और यही कामना है कि वे नारियाँ महारानी के आद" र्ा पर चलकर राश्ट्र का मस्तक ऊँच करें।

जागो दुर्गा देवियों, नारायण के साथ।
इस स्वाधीन स्वदेश की, लाज तुम्हारे हाथ।।
देखो कितना छा गया, तम, तामस, अज्ञान।
तुम हो भाक्ति समर्थ सब लाओ स्वर्ण बिहान।।
ब्रम्हाणी लक्ष्मी तुम्हीं, रुद्राणी अवतार।
उत्पत्ति, पालन, प्रलय की, तुम से भाक्ति अपार।।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

घर, घर हों दुर्गावती, दुर्गा के अनुरुप।
तब स्वदेश सत्यम्, शिवम बने सुन्दर रुप
नर रत्नों की खान हों, नारी कोख प्रत्येक।
नहीं अनेकों चाहिये, नारायण सा एक।।

मुस्लिम भाासन से पश्चात हमें अंग्रेजों के भाासन में रहना पड़ा। व्यापारी के रूप में आये अंग्रेजों ने, अपनी कुटिल और छद्म नीति अपनाकर यहाँ के भाासक बन गये। उनके जुल्म, अखरने लगे तब अपने दे" । को उनके चंगुल से छुड़ाने के लिये स्वतंत्रता संग्राम छिड़ गया। उसमें पुरुशों के साथ यहाँ की नारियों ने भी पूरा पूरा योगदान किया। क्या घर क्या बाहर सभी जगह यह युद्ध लड़ा गया। यहाँ की नारियों ने रणक्षेत्र में भी अपने भौर्य का परिचय दिया।

विद्वान कवि ने हिन्दी कविता के क्षेत्र में बहुचर्चित, ऐतिहासिक कथानक को गम्भीरता से समझने और सुबोध शैली में उसे नई पीढ़ी के अध्येताओं के समक्ष राष्ट्रभाषा में प्रस्तुत करने का सराहनीय प्रयास किया है। उपलब्ध ऐतिहासिक सामग्री राष्ट्र भाषा प्रेमियों के लिए सहजगम्य हो सके, इस भावना से अनुप्राणित होकर कवि द्वारा किये गये श्रम की सार्थकता इस तथ्य में प्रमाणित होती है कि आधुनिक हिन्दी साहित्य में वीरोचित काव्य ग्रन्थों की अत्यल्पता सुधी जनों को भलीभाँति ज्ञात है। ऐसी स्थिति में ग्रन्थ की ग्राह्यता एवं पुनः प्रकाशन का औचित्य स्वतः सिद्ध है। कवि ने तुलनात्मक दृष्टि का आश्रय लेकर ऐतिहासिक नारी चरित्र का जो विवेचन किया है, वह तर्क संगत एवं वैज्ञानिक है।